

Neutral Citation No. - 2024:AHC-LKO:57814

Court No. - 13

Case :- APPLICATION U/S 482 No. - 7156 of 2024

Applicant :- Sunil @ Vinod Kumar

Opposite Party :- State Of U.P. Thru. Its Secy. Home Deptt. Lko. And Another

Counsel for Applicant :- Anamika Singh, Sudha Mishra

Counsel for Opposite Party :- G.A.

Hon'ble Saurabh Lavania, J.

1. Heard Ms. Anamika Singh, learned Counsel for the applicant and Sri S.P. Tiwari, learned A.G.A. for the State.

2. By means of present application the applicant has assailed the order dated 10.05.2024 passed in Session Trial No. 705 of 2022 (State vs. Phoolchandra Verma alias Phoolle) by the learned Sessions Judge, Pratapgarh (in short 'trial court'), in exercise of power under Section 319 Cr.P.C.

3. Prayer has also been made to quash the entire criminal proceedings related to Session Trial No. 705 of 2022 (State vs. Phoolchandra Verma alias Phoolle), arising out of FIR No. 69 of 2022, under Section 302/504 IPC, P.S.-Patti, District-Pratapgarh, qua the applicant.

4. By the impugned order dated 10.05.2024 passed in exercise of power under Section 319 Cr.P.C., the applicant has

been summoned to face the trial under Section 302/504 IPC, P.S.-Patti, District-Pratapgarh.

5. Brief facts of the case are to the effect that an FIR was lodged on 05.03.2020 registered as FIR No. 0069 of 2022 under section 302/504 IPC by Deepak Kumar Verma/P.W.1 (informant). According to this FIR in nutshell, on account of financial transaction between applicant and the deceased amounting to the tune of Rs. 3,42,000/-, which according to the case of the prosecution was payable by the applicant to the deceased and on account of the same the applicant killed the deceased Manoj Kumar (brother of P.W.1). The FIR further indicates that the applicant by his mobile no. 7081569264, made a call at about 8:00 a.m. on 04.03.2022 on the mobile no. 9792410520 of the wife of the deceased, in relation to payment of Rs. 3,42,000/- and in response thereof the deceased left his house and when he did not return, the wife of the deceased made calls to her parent's house and other relatives to know the location of the deceased, which could not be traced out and thereafter the entire family tried to search the deceased and in the next morning i.e. on 5th March 2022 about 7:00 a.m. the body of the deceased was found near canal in the vicinity and thereafter the wife of the deceased called the applicant who after taking up the calls of the wife of the deceased lastly stated that he is going to Allahabad and thereafter his phone was found switched off.

6. After the aforesaid, the Investigating Officer (in short 'I.O.') carried out the investigation and during investigation, the I.O. recorded the statement(s) of Deepak Kumar/ PW1

(informant) and Renu/P.W.2 (wife of deceased). Before the Investigating Officer both these persons remain intact.

7. The I.O. also recorded the statement(s) of other witnesses namely Kanti Devi, Malti Devi, Sarju Prasad ,Atul Verma and one Phoolchand Verma. As per these persons, an altercation took place between Phoolchand Verma and deceased and in this altercation Phool Chand Verma caused injury at abdomen of the deceased.

8. Further the postmortem of deceased was carried out on 5.3.2022. Upon examination of the body of the deceased the Autopsy Surgeon found Abrasion on left side of neck about 3 X 5 cm, swelling all over abdomen and cause of death is shock and hemorrhage due to antemortem internal organ injury due to mucosa congested. The viscera was preserved for chemical analysis.

9. Thereafter, the statement of Autopsy Surgeon was also recorded, who supported his opinion indicated in the postmortem report.

10. It would be apt to indicate that after completion of investigation, charge-sheet was filed against Phoolchand Verma.

11. After submission of the chart-sheet dated 15.04.2022, the case was committed to court of Sessions, where the case was registered as S.T. No. 705 of 2022 (State versus Phool Chand Verma alias Phule).

12. Thereafter, the trial court taking note of the evidence collected during investigation framed the charges against the accused Phool Chand Verma under section 302 IPC.

13. To establish the case, prosecution produced/examined Deepak Verma (P.W.1)/brother of the deceased, and Renu(P.W.2)/wife of deceased. Deepak Verma(P.W.1) and Renu(P.W.2) were examined and thereafter were cross examined by the defence.

14. P.W.1 and P.W. 2 remain intact and they supported the basic story of the prosecution indicated in the FIR, as appears from the copy of the statement(s) placed on record as Annexure number 13.

15. In cross examination, on being asked by the defence counsel, wife of deceased/P.W.2 stated that she does not know Phool Chand Verma and she has reasons to believe that applicant has killed her husband.

16. In the same tune P.W.1 has also supported the story of the prosecution and reiterated the story of prosecution.

17. The statement of P.W.1, as available on record, is extracted hereinunder:-

"दिनांक 07.04.23

गवाह—दीपक कुमार पुत्र राम लखन उम्र 28 वर्ष पेशा कृषि निवासी हंसापट्टी थाना पट्टी जिला प्रतापगढ़ ने सशपथ बयान किया कि मृतक मनोज कुमार मेरे बड़े भाई थे वह टाइल्स मार्बल की ठेकेदारी का कार्य विनोद कुमार उर्फ सुनील कुमार निवासी परसद थाना आसपुर देवसरा के साथ करते थे दिनांक 04.03.2022 को समय सुबह लगभग 8.00 बजे मेरी भाभी रेनू पत्नी मनोज कुमार के मोबाइल नम्बर पर विनोद कुमार उर्फ सुनील कुमार ने फोन करके अपने घर पर मनोज कुमार को यह कहकर बुलाया कि आओ और पुराना हिसाब तीन लाख चालिस हजार ले जाओ और एक नये द

18 की डिजाइन का कार्य करना है मेरे भाई मनोज और विनोद से पैसे से लेन देन के सम्बन्ध में कुछ दिन पहले से विवाद चल रहा था पैसे देने की बात पर मेरे भाई मनोज विनोद के घर गये। शाम तक घर वापस न आने पर मेरी भाभी रेनू ने विनोद को मोबाइल पर फोन करके पूछा की आपके पति मनोज शाम 4.00 बजे हमसे पैसा लेकर अपनी ससुराल बारडीह गये है इतना सुनने के बाद मेरी भाभी ने अपने मायके बारडीह फोन करके मायके वालों से जानकारी किया तो मायके वालों ने मेरी भाभी को बताया कि मनोज यहां नहीं आये हुए है इसके बाद मैं अपने परिजन के साथ अपने भाई मनोज की तलाश रिश्तेदार के यहां व अन्य स्थानों पर करने लगा किन्तु कोई पता नहीं चला मैं अपने भाई की रात्रि भर तलाश किया किन्तु नहीं मिले दूसरे दिन दिनांक 05.03.2022 को सुबह लगभग 7.00 बजे मोबाइल के माध्यम से पता चला कि मेरे भाई मनोज का शव भरोखन नहर के पास गेहू के खेत में है लाश मिलने की जानकारी होने के बाद मेरी भाभी रेनू ने विनोद को फोन करके घटना के बारे में अवगत कराया विनोद ने बताया कि मैं जानकारी करके बताता हूं। उसके बाद मेरी मां राज कुमारी ने विनोद उर्फ सुनील के पास फोन करके पूछा तो उसने बताया कि मैं इस समय बंधवा बाजार में हूं। और घटनास्थल पर जाकर देख करके आप को बताता हूं। किन्तु विनोद ने काफी देर तक कोई जानकारी मेरी मां को नहीं दिया पुनः मेरी मां ने विनोद के मोबाइल पर पुनः फोन किया तो विनोद ने मोबाइल पर पुनः फोन किया तो विनोद ने बताया कि मैं इलाहाबाद जा रहा हूं इसके बाद विनोद से फिर सम्पर्क करने का प्रयास किया गया तब उनका मोबाइल बन्द बताने लगा फिर जानकारी की गयी तब पता चला कि मेरा भाई दिनांक 04.03.22 को रात्रि लगभग 8.00 बजे तक विनोद के घर पर ही था विनोद का मेरे भाई मनोज से पैसे के लेनदेन को लेकर लगभग 4-5 साल से विवाद चल रहा है मेरी भाभी रेनू व मेरी मां जब जब फोन से विनोद से बात कर रही थी मेरे भाई के बारे में जानकारी कर रही थी तब उनके साथ में भी मौजूद था बात करते में सुना मेरी मां और भाभी ने मुझे बताया मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे भाई की हत्या पैसे के लेन देन को लेकर चल रहे विवाद के कारण विनोद कुमार उर्फ सुनील कुमार ने की है।

विनोद का मोबाइल जब बन्द हो गया तो हम अपने परिजनों के साथ भरोखन नहर के पास गेहू के खेत में गया जहां मेरे भाई मनोज का शव पड़ा हुआ था शव को देखा और पहचान किया शव मेरे भाई मनोज का है गांव वालों की सूचना पर हम लोगो के पहुंचने से पहले घटना पर पुलिस पहुंच चुकी थी इसके बाद मैं थाना पट्टी गया जहां मैंने स्वयं एक तहरीर लिखकर उस पर अपने हस्ताक्षर बनाकर थाने पर दिया पत्रावली में शामिल कागज संख्या 3अ/3 को देखकर साक्षी ने कहा यह वही तहरीर है जो मैंने लिखकर थाने पर दिया था जिस पर मेरे हस्ताक्षर हैं मैं अपने हस्ताक्षर की पुष्टि करता हूं जिस पर प्रदर्शक-1 डाला गया। इसके बाद मैं घटनास्थल पर आया जहां मुकामी पुलिस द्वारा मेरे व मौजूद लोगो में से पंचान नियुक्ति कर शव के पंचायतनामा की कार्यवाही की लिखा पढ़ी मेरे सामने की गयी पत्रावली में शामिल कागज संख्या 8अ/1, 8अ/2, पंचायतनामा की कार्यवाही देखकर साक्षी ने कहा पंचायतनामा की लिखा पढ़ी मेरे सामने हुयी थी। जिस पर मेरे हस्ताक्षर हैं मैं अपने हस्ताक्षर की पुष्टि करता हूं। घटना के सम्बन्ध में विवेचक ने मेरा बयान लिया था जो देखा था वह बताया था। बयान मेरे बोलने पर पेशकार द्वारा खुले न्यायालय में लिखा गया।

शेष जिरह दिनांक 07.04.23 से आगे-

दिनांक 10.08.2023

गवाह— दीपक कुमार पुत्र रामलखन ने पुनः सशपथ बयान किया कि जो एफ आइ आर मैने थाने पर लिखवाया था वह सही लिखवाया था मृतक मनोज कुमार हंसापट्टी का रहने वाले थे और मेरे भाई थे। नामजद अभियुक्त विनोद कुमार उर्फ सुनील कुमार वर्मा परसद का रहने वाला था परसद और कंसापट्टी में 20-25 किमी० का अन्तर है। मृतक मनोज मेरे भाई का लाश भरोखन नहर के पास गेहूँ के खेत में मिली थी जहाँ लाश मिली थी वह सीन परसद से 4-5 किमी० दूर है। मेरे मृतक भाई की लाश भरोखन नहर के पास गेहूँ के खेत में होने की सूचना सबसे पहले मेरे गांव के चंदन पत्रकार ने दिया था इसके बाद हम लोगो ने अपने घर आकर घटना के बारे में सबको बताया और घटना की सूचना विनोद कुमार उर्फ सुनील से फोन करके पूँछा क्योंकि मेरे भाई मृतक मनोज कुमार विनोद के साथ ही गया था, पूँछने पर विनोद कुमार ने कोई सही बात नहीं बताया क्योंकि मेरा भाई मनोज कुमार विनोद के घर पर उसके बुलाने पर बकाया पैसा लेने गया था।

विनोद कुमार उर्फ सुनील का जो आचरण था उसे प्रकट हो रहा था कि मेरे भाई की हत्या पैसे के लेनदेन को लेकर और पैसा वापस न करना पड़े इस कारण शराब पिलाकर करा दिया।

बयान मेरे बोलने पर पेशकार द्वारा खुले न्यायालय में लिखा गया। "

18. The statement of P.W.2, as available on record, is extracted hereinunder:-

"दिनांक 12.10.23—

गवाह— श्रीमती रेनू देवी पत्नी स्व० मनोज कुमार उम्र 22 वर्ष पेशा गृहणी निवासी कल्सापट्टी थाना पट्टी जिला प्रतापगढ़ ने सशपथ बयान किया कि मेरी शादी मनोज कुमार के साथ दिनांक 20.06.2017 को हुयी थी मेरे पति मनोज, विनोद उर्फ सुनील कुमार के साथ टाइल्स लगाने व ठेकेदारी का कार्य करते थे। मेरे घर सुनील कुमार वर्मा का आना जाना भी था। कभी कभी सुनील वर्मा रात्रि में मेरे घर रुकते थे और खाना भी खाते थे मैं उनको बखूबी जानती पहचानती हूँ। मेरे पति का सुनील वर्मा से तीन लाख ब्यालिस हजार का लेने देने का विवाद चार पांच साल से चल रहा था पैसे के लेन देन की बात मेरे पति ने मुझे बताया था और मेरे सामने भी मेरे पति और सुनील कुमार के बीच पैसे के लेन देन की बातचीत हुयी थी उसी पैसे के लेन देन को लेकर सुनील कुमार वर्मा ने मेरे पति को दिनांक 04.03.22 को बुलाया था सुबह 8.00 बजे मेरे मोबाइल नम्बर पर विनोद कुमार उर्फ सुनील वर्मा ने अपने मोबाइल से फोन करके मेरे पति को यह कहकर बुलाया कि उनको मेरे घर भेज दीजिए और अपना पुराना बकाया पैसा ले जाये और एक नये घर की डिजाइन का कार्य भी करना है इस बात को सुनकर मैंने अपना मोबाइल अपने पति को दे दिया की सुनील वर्मा का फोन आया है बातचीत कर लीजिए मेरे सामने मेरे पति ने उक्त

मोबाइल से उक्त पैसे के लेनदेन व कार्य की बातचीत की इसी बात को लेकर मेरे पति मुझसे यह बताकर कि मैं सुनील वर्मा के घर पुराना बकाया पैसा लेने व नये मकान का कार्य मिला है उसे देखने जा रहा हूं जब मेरे पति शाम 4.00 बजे तक वापस नहीं आये तो मैंने सुनील वर्मा को फोन करके पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि आपके पति मनोज मुझसे पैसा लेकर 4.00 बजे शाम को अपनी ससुराल बारडीह चले गये हैं इसके बाद मैंने अपने मायके अपनी भाभी को फोन करके अपने पति के बारे में जानकारी किया तब मेरी भाभी ने बताया कि आपके पति मनोज यहां नहीं आये हुये हैं। तब मैंने अपने अन्य रिश्तेदारों के यहां फोन करके पता किया किन्तु कहीं पता नहीं चला दूसरे दिन 05.03.22 को सुबह 7.00 बजे लगभग मोबाइल के माध्यम से पता चला कि भरोखन नहर के पास गेहू के खेत में मनोज का शव पड़ा हुआ है फिर मे इस जानकारी के बाद मैंने पुनः सुनील कुमार को फोन किया और उक्त घटना के बारे में बताया तो उन्होंने मुझसे कहा कि पता करके बता रहा हूं फिर कुछ देर बाद मैंने दुबारा सुनील कुमार को फोन किया उन्होंने बताया कि मैं बंधवा बाजार में हूं आ रहा हूं। कुछ देर इन्तजार करने के बाद मैंने तीसरी बार विनोद को फोन किया तो सुनील उर्फ विनोद ने बताया कि मैं इलाहाबाद जा रहा हूं और अपना मोबाइल बन्द कर लिया फिर मेरे परिवारीजन घटनास्थल भरोखन नहर के पास गये शव की पहचान कर शव को घर ले आये वह शव मैंने देखा देखा कि वह शव मेरे पति मनोज कुमार का था। मुझे पूरा विश्वास है कि सुनील कुमार उर्फ विनोद ने मेरे पति का हत्या कर शव को भरोखन नहर के पास फेंक दिया यह हत्या पैसे के लेनदेन को लेकर सुनील उर्फ विनोद द्वारा की गयी घटना के सम्बन्ध में विवेचक ने मेरा बयान लिया था। मेरे देवर दीपक कुमार घटना के सम्बन्ध में थाना पट्टी में मुकदमा लिखवाया था।

जिरह अभियुक्त के अधिवक्ता द्वारा—

विनोद उर्फ सुनील का फोन मेरे मोबाइल पर मेरे सामने आया था उक्त फोन से मैंने व मेरे पति ने बातचीत की थी बातचीत करने के बाद मेरे पति ने बताया कि विनोद उर्फ सुनील वर्मा आज पैसा देने के लिए मुझे बुला रहे हैं मैं जा रहा हूं वहां पहुंचने के बाद मेरे पति ने फोन करके बताया कि मैं पहुंच गया हूं मुझे मेरे पति ने फोन करके यह नहीं बताया था कि विनोद ने मुझे पैसा दे दिया है जबकि विनोद ने यह बताया कि मैंने पैसा आपके पति को दे दिया है। इसके बाद मेरी मेरे पति से कोई बातचीत नहीं हुई।

मुझे यह जानकारी है कि इस मुकदमें में फूलचन्द्र वर्मा उर्फ फुले को अभियुक्त बनाया गया है मैं फूलचन्द्र वर्मा को नहीं जानती पहचानती हूं। मेरी कभी मुलाकात नहीं हुयी है मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे पति की हत्या विनोद कुमार उर्फ सुनील कुमार वर्मा ने किया है।

बयान मेरे बोलने पर पेशकार द्वारा खुले न्यायालय में लिखा गया।"

19. After recording the statement(s) P.W.1 and P.W.2, an application i.e. Application No. 15 ka 11 under Section 319 CrP.C was preferred by D.G.C. Criminal.

20. The trial court, thereafter on the said application, passed the order under challenged dated 10.05.2024 and from perusal of the order under challenge dated 10.05.2024, it is apparent that trial court considered the contents of the FIR and the statements of witnesses namely Deepak Kumar Verma(P.W.1) and Renu(P.W.2) and by this order dated 10.05.2024, the trial court has directed the applicant to face the trial under section 302/504 IPC.

21. In the aforesaid background of the case the present application has been filled.

22. The applicant has impeached the order dated 10.05.2024 on following facts and grounds, as appears from the submissions advanced by the learned counsel for the applicant as also the averments made in the present application:-

(i) During investigation the Investigating Officer recorded the statement of the eye witnesses as also of Phool Chand Verma, according to which the abdomen injury was caused by Phool Chand Verma and the I.O. thereafter filed the charge-sheet against Phool Chand Verma and the trial court while passing the order dated 10.05.2024 did not consider these statements and as such committed material illagility.

(ii) The Investigating Officer also recorded the statement of Autopsy Surgeon and according to the same, Manoj Kumar,

the deceased, expired due to abdomen injury and according to eye witnesses Phool Chand Verma caused injury on the abdomen of deceased;

(iii) The P.W.1 and P.W.2 are not the witnesses of last seen and as such their testimony is not reliable testimony and based upon the same the applicant ought not to have been summoned to face the trial;

(iv) The trial court in exercising the power under Section 319 Cr.P.C. in the facts of the case erred in facts and law both;

23. Learned counsel for the applicant in support of her submissions has placed reliance on the following judgments:-

(i) Manjeet Singh vs. State of Haryana and Others (2021) 18 SCC 321;

(ii) Suraj Mal vs. The State (Delhi Administration) 1979 CRI. L.J. 1087;

(iii) Mahmood Ali and Others vs. State of U.P. and Others; 2023 SCC OnLine SC 950;

(iv) Criminal Appeal No. 3172 of 2023 (Aarif & Ors. vs. The State of Rajasthan & Another);

(v) Shankar vs. State of U.P., AIRONLINE 2024 SC 300.

24. Learned A.G.A. opposed the present application. It is stated that trial court has passed the order in accordance with law settled by the Hon'ble Apex Court in various pronouncements.

25. Considered the aforesaid and perused the records.

26. The law related to summoning the accused in exercised its power under section 319 Cr.P.C., has already been settled by various pronouncement of Hon'ble Apex Court. In view of the observations made by the Hon'ble Apex Court in the judgment passed in the case of *Hardeep Singh Vs. State of Punjab* (2014) 3 SCC 92, *Brijendra Singh and Others Vs. State of Rajasthan*, (2017) 7 SCC 706, *Rajesh and Others Vs. State of Haryana*, (2019) 6 SCC 368, *Manjeet Singh Vs. State of Haryana & Ors.*, (2021) 18 SCC 321, *Sukhpal Singh Khaira Vs. State of Punjab*, (2023) 1 SCC 289, *Yashodhan Singh and Others Vs. State of U. P. and Others*, (2023) LiveLaw (SC) 576 : 2023 INSC 652, the trial Court while exercising the power under Section 319 Cr.P.C. is under obligation to consider the evidence recorded before it during trial as also the evidence received by it after cognizance is taken and before commencement of trial.

27. On the aforesaid, the Hon'ble Apex Court in the case of *Hardeep Singh* (supra) in para 78 observed that "*the word "evidence" in Section 319 CrPC means only such evidence as is made before the court, in relation to statements, and as produced before the court, in relation to documents. It is only such evidence that can be taken into account by the Magistrate or the court to decide whether the power under Section 319 CrPC is to be exercised and not on the basis of material collected during the investigation*". and thereafter in para 85 it has been observed that "*in view of the discussion made and the conclusion drawn hereinabove, the answer to the aforesaid question posed is that apart from evidence*

recorded during trial, any material that has been received by the court after cognizance is taken and before the trial commences, can be utilised only for corroboration and to support the evidence recorded by the court to invoke the power under Section 319 CrPC. The “evidence” is thus, limited to the evidence recorded during trial.” and subsequently, in the case of **Rajesh and Others (supra)** in para 6.8 held that "*Considering the law laid down by this Court in Hardeep Singh [Hardeep Singh v. State of Punjab, (2014) 3 SCC 92 : (2014) 2 SCC (Cri) 86] and the observations and findings referred to and reproduced hereinabove, it emerges that (i) the Court can exercise the power under Section 319 CrPC even on the basis of the statement made in the examination-in-chief of the witness concerned and the Court need not wait till the cross-examination of such a witness and the Court need not wait for the evidence against the accused proposed to be summoned to be tested by cross-examination; and (ii) a person not named in the FIR or a person though named in the FIR but has not been charge-sheeted or a person who has been discharged can be summoned under Section 319 CrPC, provided from the evidence (may be on the basis of the evidence collected in the form of statement made in the examination-in-chief of the witness concerned), it appears that such person can be tried along with the accused already facing trial.*" and thereafter, in the case of **Manjeet Singh (supra)** observed as under:

"15.11. The word “evidence” in Section 319 CrPC means only such evidence as is made before the court, in relation to

statements, and as produced before the court, in relation to documents.

15.12. It is only such evidence that can be taken into account by the Magistrate or the court to decide whether the power under Section 319 CrPC is to be exercised and not on the basis of material collected during the investigation."

28. Thus, it is apparent that trial court is not under obligation to consider the evidence collected by the Investigating Officer during investigation.

29. In regard to the aforesaid as also, in view of settled legal proposition indicated above, this Court is of the view that trial Court has not committed any illegality in not considering the evidence collected by the I.O. during investigation.

30. In so far as the reliability of testimony/evidence of P.W.1 and P.W.2 is concerned, this Court is of the view that any observation made by this Court at this stage of the proceedings on this aspect of the case would prejudice the case of parties before trial court.

31. However, it would be apt to indicate that for the purpose of summoning the applicant to face the trial, the trial court to the view of this Court has not erred in law and facts both. It is for the following reasons:-

- (i) Prompt FIR making specific allegation against the applicant was lodged.
- (ii) P.W.1 and P.W.2 supported the basic story of the prosecution, as narrated in the FIR.

(iii) The trial court after taking note of evidence, as per law settled, available before it i.e. evidence of P.W.1 and P.W.2 recorded its satisfaction and thereafter passed the order dated 10.05.2024, under challenge.

32. For the reasons aforesaid, the present application is *dismissed*. Costs made easy.

Order Date :- 23.8.2024
Jyoti/-